कबीरदास परिचय

जन्म	—	समवत् १४५५ई०
जन्म स्थान	—	काशी
पत्नी	—	लोई
पुत्र	—	कमाल
पुत्री	—	कमाली
गुरु	—	स्वामी रामानन्द
काल	—	भक्तिकाल
रचनाएँ	—	बीजक(साखी, सबद)
मृत्यु	—	सम्वत् १५७५
मृत्यु स्थान	—	मगहर

पाहनपूजै हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
ताते यह चाकी भली, पीस खाए संसार॥

अर्थः- कबीर कहते हैं कि पत्थर पूजने से यदि ईश्वर मिलता है तो मैं पहाड़ पूज लूंगा। इससे तो पत्थर की पुक्की ही भच्छी जिसमें पीसा गया अन्न लोगों के पेट भरने के काम आता है।

२०२१-२२

संत कबीर दास

भाभोर अंजली आर, रोलनं-१६३

आदिवासी आर्ट्स & कॉमर्स, कॉलेज संतरामपुर

मुख्य विषय :- हिन्दी

नाम :- मकवाणा रोशनीबहन अतुलभाई
SEM :- B.A. SEM :- 3
Roll no :- 249

2021-22

मैथिलीशरण गुप्त

गुप्तजी के साहित्य का महत्त्व केवल द्विवेदीयुगीन काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में ही नहीं, बल्कि समूची आधुनिक हिन्दी कविता की दृष्टि से भी है। खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, मानवतावादी नैतिक सांस्कृतिक धारा के विशिष्ट उद्गाता एवं आधुनिक हिन्दी कविता के अन्यतम शिल्पी के रूप में गुप्तजी का नाम सदैव अमर रहेगा। ब्रजभाषा के वर्चस्व को क्षीण करते हुए खड़ी बोली की प्रतिष्ठा कविता के क्षेत्र में जितनी ताकत के साथ गुप्तजी ने की थी, उतनी शायद कोई दूसरा कवि नहीं कर सका। उस दृष्टि से उनका महत्त्व केवल साहित्यिक ही नहीं, ऐतिहासिक भी है,

जन्म :- गुप्तजी का जन्म 3 अगस्त, सन् 1886 ई. के मध्य प्रदेश के 'चिरगाँव' जिला झाँसी में हुआ था। उनके पिता का नाम सेठ रामचरण और माता का नाम काशीबाई था। माता-पिता दोनों ही बड़े धार्मिक थे, जिनके संस्कारों का प्रभाव बालक मैथिलीशरण पर पड़ना स्वाभाविक था। घर में धन का अभाव न था। पैतृक व्यवसाय घी का था और बड़ी की दुकान भी थी। रामभक्ति के प्रति पहला आकर्षण गुप्तजी के मन में अपने पिता के कारण ही जागा। उनके पिताजी रोज सुबह उठकर रामनाम की महिमा का गान किया करते थे, जिन्होंने स्वयं रामभक्ति सम्बन्धी काव्यरचना भी की थी, जिनमें 'रहस्य रामायण' का विशेष स्थान है।

यही नहीं गुप्तजी को कविता लिखने की प्रेरणा भी अपने पिता से प्राप्त हुई। 15 वर्ष की अवस्था में कवि ने जब एक छन्द लिखा, तो पिता को अत्यन्त आनंद हुआ था और आशीर्वाद देते हुए उन्होंने कहा भी था कि - 'हमने हृदय से आशीर्वाद दिया है कि वह हमसे हजार गुनी अच्छी कविता करे, सो हम तो न रहेंगे, पर तुम देखना।' सन् 1903 में गुप्तजी के पिता का स्वर्गवास हो गया और सन् 1904 ई. में उनकी माता का भी देवलोकगमन हो गया। परिवार की देखरेख गुप्तजी के छोटे चाचा भगवानदासजी करते रहे और वे गुप्तजी को कविता-लेखन की ओर विशेष रूप से प्रवृत्त करते रहे।

शिक्षा :- गुप्तजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। प्राइमरी पाठशाला की पढ़ाई पूर्ण करके वे झाँसी में आगे पढ़ने के लिए गये। यहीं आकर गुप्तजी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। मित्रों के साथ खेलकूद करने, नाटक और रामलीला आदि देखने का शौक उनके दिल में जाग उठा। पिता को यह सब पसंद नहीं आया और उन्होंने अपने पुत्र को घर वापस बुला लिया। इसके बाद तो उनकी पढ़ाई का सिलसिला टूट-सा गया। घर पर भी उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला और उर्दू आदि भाषाओं का अध्ययन किया।

गृहस्थजीवन :- नौ वर्ष की अल्पायु में (सन् 1895 ई.) गुप्तजी का विवाह हो गया। लेकिन सन् 1903 ई. में प्रसव-पीड़ा के कारण उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। उनका दूसरा विवाह सन् 1904 ई. में हुआ था। दूसरी पत्नी भी आठ साल तक उनके साथ दाम्पत्य जीवन बिताकर इस संसार से चल बसी। 28 वर्ष की अवस्था में गुप्तजी ने तीसरा विवाह किया। उनकी तीसरी पत्नी का नाम सरयूदेवी था, जिसने 9 सन्तानें हुई, परंतु एक सन्तान ही जीवित रह सकी। कवि ने सन्तानशोक की अभिव्यंजना 'द्वापर' और 'सिद्धराज' आदि में की है। गुप्तजी के जीवन की बाल्यावस्था जहाँ चाँदनी की शीतलता में व्यतीत हुई थी, वहीं जवानी सूर्य की उष्णता के बीच गुजरने लगी। पिता की मृत्यु के बाद घर की समृद्धि दिन प्रतिदिन कम होने लगी। फिर भी गुप्तजी ने हिम्मत से काम लिया और वे लक्ष्मी से उदासीन होकर सरस्वती के चरणों में समर्पित हो गये। सरस्वती का वरदान उन्हें कुछ ऐसा मिला कि उनका घर और उनकी लेखनी दोनों निहाल हो गये।

जीवन-क्षेत्र :- गुप्तजी पर महात्मा गाँधीजी का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा था। अतः होश संभालते ही वे राष्ट्रीय आंदोलन के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गये। कई बार उन्हें ब्रिटिश सरकार का कोप-भजन भी बनना पड़ा। कई बार उन्हें जेल की यात्राएँ करनी पड़ी। जेल में रहकर गुप्तजी ने 'जय भारत' और 'कुणालगीत' जैसी रचनाएँ लिखी। सच है, कविता उनकी कलम से नहीं, सूत के तारों से निकली थी। उनका जीवन और साहित्य राष्ट्रीय आंदोलन की एक पूरी यात्रा ही थी।

राष्ट्रीय सम्मान :- सन् 1951 ई. में गुप्तजी को भारत की राजसभा का सम्मानित सदस्य चुना गया। वहाँ पर भी उनका कविरूप निखरता ही गया। 'अहो तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार' कहते हुए उन्होंने एक बार राजसभा के सदस्यों के कान खड़े कर दिये थे। सारे देश ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' के नाम से सम्बोधित किया और सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' और 'डॉक्टर' जैसी अनेक पदवियाँ प्रदान की थीं, वे सच्चे अर्थों में भारतमाता के सपूत थे।

कृ निधन :- 12 दिसम्बर, 1964 ई. को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का निधन हो गया। उस दिन देशभर में शोक के बादल गहरा उठे थे। राष्ट्रकवि का पद तब से लेकर आज तक खाली पड़ा है। उनके चले जाने से भारत माता का 'लेखनीकार' ही उठ गया।

कृतित्त्व :- गुप्तजी मूलतः प्रबन्धकार थे, किन्तु उन्होंने गीति और गीतिनाट्य भी लिखे हैं। उनकी प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया जा सकता है -

1. रंग में भंग — ऐतिहासिक खण्डकाव्य
2. जयद्रथवध — महाभारतीय खण्डकाव्य
3. भारतभारती — उद्बोधनात्मक पद्य निबंध
4. तिलोत्तमा — पौराणिक नाटक
5. वैतालिक — उद्बोधन गीति
6. किसान — सामाजिक खण्डकाव्य
7. अनघ — बौद्धकालीन पद्यनाट्य
8. पंचवटी — रामायण का पंचवटी प्रसंग, खण्डकाव्य
9. झंकार — रहस्यवादी गीतिकाव्य
10. साकेत — रामायणीय महाकाव्य
11. यशोधरा — खण्डकाव्यात्मक स्वरूप
12. सिद्धराज — ऐतिहासिक खण्डकाव्य
13. द्वापर — गीतिकाव्य
14. नहुष — महाभारतीय खण्डकाव्य
15. कुणालगीत — गीतिकाव्य
16. जयभारत — महाभारतीय प्रबंध काव्य
17. विष्णुप्रिया — मध्यकाल के सम्बन्ध काव्य
18. मेघनादवध (अनूदित) बंगला से।
19. घटोत्कच (अनूदित) संस्कृत से।

रेडियो

* नाम :- प्रो. शिवकुमार जी
कुमार विद्यासागर ए

* सेम :- (B.A)

* हिन्दी विभाग 2021 - 22

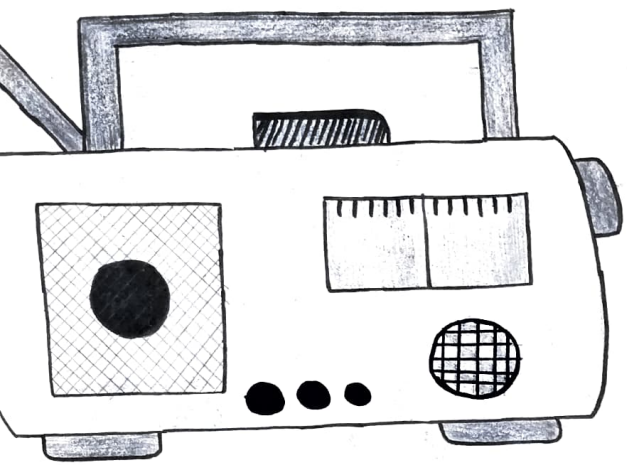

⇒ रेडियो का आविष्कार मारकोनी किया था।

⇒ दुनिया के पहले रेडियो स्टेशन साल 1918 में न्युयॉर्क में हुई थी।

⇒ 13 फरवरी का दिन वर्ल्ड रेडियो डे के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि 13 फरवरी, साल 1946 से ही युनाइटेड नेशंस ऑर्गेनाइजेशन द्वारा रेडियो प्रसारण की गई थी।

⇒ पहले रेडियो प्रसारण की शुरूआत 24 दिसंबर 1906 को कैनेडियन वैज्ञानिक रेजिनाल्ड फेसेंडेन ने की थी।

भारत में रेडियो की शुरूआत साल 1924 में सबसे पहले मद्रास प्रेसीडेंसी क्लब रेडियो को लेकर आया था। इस क्लब रेडियो को साल 1927 तक रेडियो ब्राडकास्टिंग पर प्रसारण का काम किया था, हालांकि बाद में आर्थिक परेशानियों के चलते इसे बंद कर दिया गया था।

इसके बाद इसी साल 1927 में बम्बई के कुछ बड़े बिजनेसमैन ने भारतीय प्रसारण कंपनी को बम्बई और कलकत्ता में शुरू किया। इसके बाद साल 1932 में भारत सरकार ने इसकी जिम्मेदारी ले ली और इंडियन ब्रॉडकास्टिंग सर्विस नाम का विभाग शुरू किया जिसका साल 1936 में नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो (All India Radio AIR) रख दिया गया, जो कि आकाशवाणी के नाम से भी जाना जाता है।

मोहन राकेश

जीवन परिचय :-

जन्म :- 8 जनवरी 1925 को
जन्मस्थान :- पंजाब के अमृतसर शहर में
मृत्यु :- 3 जनवरी 1972 नई दिल्ली में
पिता :- श्री करमचन्द्र गुगलानी जो पेशे से एक वकील थे, परन्तु साहित्य और संगीत में विशेष रुचि रखते थे।

पूरा नाम :- मदनमोहन गुगलानी
शिक्षा एवं कार्य :- इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी और अंग्रेजी में एम ए MA की डिग्री पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। मोहन राकेश एक सफल नाटककार एवं लेखक रहे हैं। मोहन राकेश की आर्थिक स्थिति सही नहीं थी और जब 8 फरवरी 1941 को पिता का आकस्मित मृत्यु हो गयी, तब उन्हें अपने पिता के दाह संस्कार के लिये अपनी माता के हाथों की सोने की चुड़ियां बेचनी पड़ी। इनके द्वारा रचित कथा - साहित्य में समाज के विभिन्न पात्रों के जीवन का स्वभाविक चित्रण हुआ है। मानवीय संवेदना पर आधारित हिन्दी निबंध अत्यंत रोचक एवं प्रभावपूर्ण है। इन्होंने आधुनिक नाट्य साहित्य को नई दिशा प्रदान का और हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक परिवेश से संबंध करने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया। राकेश जी की प्रथम कहानी "नन्ही" थी। मोहन राकेश के कई निर्देशकों को भाए और कई प्रमुख भारतीय निर्देशक ने मोहन राकेश के नाटकों का निर्देशन किया। इनकी आजीविका अध्यापन - कार्य से शुरु हुई! इन्होंने मुंबई, शिमला, जालंधर और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। नाटक की भाषा" पर काम - करने के लिए भारत सरकार ने उन्हें नेहरु फेलोशिप भी प्रदान की

राकेश जी को 3 जनवरी 1972 को अचानक सीने में दर्द उठा और मोहन राकेश जी के मृत्यु हो गयी।

साहित्यिक - योगदान

मोहन राकेश आधुनिक नाटक साहित्य को नई दिशा देने वाले प्रतिभा - संपन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक परिवेश के साथ सम्मिलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की इन्होंने दिल्ली से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका 'सारिका' का संपादन भी किया लेकिन उन्होंने इस पद से अपना त्यागपत्र दे दिया और अपने अंतिम समय तक स्वतंत्र लेखन में व्यस्त रहे। नाटक - उपन्यास कहानी निबंध यात्रावृत और आत्मकथा के क्षेत्र में इन्होंने हिन्दी साहित्य को कई अमूल्य कृतियां प्रदान की हैं।

2021 - 22